रुट ट्रेनर का साइज

300 से 400 सीसी साइज के रुट ट्रैनर पौधो की अच्छी वृद्धि के लिए उपयुक्त पाये गये।

पॉटिंग मिश्रण

विभिन्न रुट ट्रैनर साइजों में कुल 37 प्रकार के पोटिंग मिक्चर का प्रयोग किया गया। जिसमें अधिकतम पौध वृद्धि रेत, मिट्टी एवं गोबर खाद (1:1:1) के साथ प्रति पौध 4 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेस्ट के मिश्रण में पायी गई। अत: यह मिश्रण इस प्रजाति की पौध वृद्धि के लिये अत्यंत उपयोगी होगा।

रोपण हेतु पौध ऊँचाई/आयु

उपरोक्त साईज के रुट ट्रैनर मे तैयार 06 से 08 माह पुराने पौधे को रोपण हेतु उपयोग किया जा सकता है एवं रोपण के समय पौधे की कुल लम्बाई 67 से 77 से.मी. अथवा उससे अधिक होना चाहिए।

उपयोग

लकड़ी जलाऊ लकड़ी के रूप मे एवं फल औषधीय में उपयोग किए जाते है। पेट से संबंधित बीमारी जैसे, भूख न लगना, कब्जए उल्टी आना, भारीपन, थकावट, आदि बीमारियों के लिए दवाई तैयार करने में आयुर्वेद में इसका उपयोग किया जाता है।

परंतु आयुर्वेद में गर्भवती स्त्रियों को इसका सेवन निषेध है। इसके साथ ही इसके फलों का उपयोग

डायरिया, बुखार, खांसी, अस्थमा, पेशाब संबंधित बीमारी और पेट के कीडों से होने वाले तकलीफ की औषधि भी तैयार करने में किया जाता है। इसमें पाया जाने वाला मायरोवैलन का उपयोग लैदर सोल तैयार करने में, किताबों की लैदर बाइंडिंग, आदि में किया जाता है। इसका प्रयोग त्रिफला, च्यवनप्राश आदि औषधि तैयार करने में भी किया जाता है। इसके फल की व्यावसायिक स्तर पर अध्याधिक मांग होने के कारण एवं बीज की अंकुरण क्षमता कम होने के कारण वन क्षेत्रों में इसका प्राकृतिक पुनरोत्पादन काफी कम देखा गया है।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वरिष्ठ वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

(0761) 2666529, 2665540

हर्रा
रुट ट्रेनर में उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

(टरमेनेलिया चिबुला)

वन उत्पादकता प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

Scanned with OKEN Scanner

हर्रा-रुट ट्रैनर में उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

प्रजाति का नाम - हर्रा
वनस्पति का नाम- टरमेनेलिया चिबुला

परिचय

यह कॉम्ब्रिटेशी कुल का वृक्ष है। इसे हरड के नाम से भी जाना जाता है। हर्रा को वैद्यों ने चिकित्सा साहित्य में अत्यधिक सम्मान देते हुए उसे अमृतोपम औषधि कहा है। इसके बारे में कहा जाता है कि - ''यस्य माता गृहे नास्ति, तस्य माता हरीत की।'' कदाचिद् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीत की। अर्थात् हरीतकी मनुष्यों की माता के समान हित करने वाली है। माता तो कभी कभी कुपित भी हो जाती है, परन्तु उदर स्थिति अर्थात् खायी हुई हरड़ कभी भी अपकारी नहीं होती।

पहचान

मध्यम आकार का अधिकतम ऊँचाई 30 मीटर वाला वृक्ष है। यह वृक्ष गहरे भूरे रंग की छाल के साथ साथ उस पर पाये जाने वाले काष्ठीय कांटे एवं पत्रक के ऊपर की तरफ जोडे में पाये जाने वाली ग्रंथियों के कारण पहचाना जाता है।

प्राप्ति स्थान

यह भारत के लगभग सभी भाग में पाया जाता है इसके साथ-साथ यह प.बंगाल असम एवं दक्कन पठार पर पाया जाता हैं। म.प्र. में यह सिवनी, सरगुजा, कोरबा, मण्डला, जबलपुर, बैतूल आदि।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

यह ज्यादातर लेटेराइट, रेतीली दोमट, काली कपासी एवं विभिन्न मृदा में पाया जाता है, जिसमें अधिक से अधिक जल धारण क्षमता होती है। यह प्रकाशपेक्षी एवं पाले के प्रति संवेदनशील परंतु शुष्क प्रतिरोधी वृक्ष है। यह लगभग 40 से 120 इंच वार्षिक औसत वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी वृद्धि करता है।

बीज चक्र (seed Cycle)

बीज उत्पादन प्रतिवर्ष होता है। परंतु एक वर्ष के अंतराल पर बीज का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

वृक्ष में मई से जून के मध्य फूल आते है। वृक्ष में नवम्बर से जनवरी माह के मध्य फल लगते हैं एवं फरवरी से मार्च में पककर तैयार होते हैं। इसके फल अण्डाकार एवं 3 से 5 सेमी लंबे होते हैं।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीज संख्या 200 से 250 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज की जीवन क्षमता अवधि 09 से 12 महीने तक होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में किसी भी प्रकार की सुसुप्तावस्था नहीं पायी जाती है।

अंकुरण क्षमता

बीज की अंकुरण क्षमता सामान्यत: 25 से 30 प्रतिशत तक पायी जाती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशत 15 से 20 प्रतिशत तक प्राप्त होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

पोलीथीन बैग में सिलिका जैल रसायन के साथ 1 से ½ वर्ष तक जीवन क्षमता अवधि बढाई जा सकती है।

उपयोगिता की अवधि

बीज संग्रहण के पश्चात् 06 से 09 माह के अंदर उपयोग में लिया जाना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

बुवाई के पूर्व 10% सांद्रता के सल्फ्यूरिक अम्ल के साथ 10 मिनिट तक डुबोकर रखने पर अधिक अंकुरण प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

महीन छनी हुई रेत का उपयोग अंकुरण हेतु किया जाना चाहिए।

बुआई का समय

बुवाई का उपयुक्त समय अप्रैल से मई माह होता है।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 1.5 से 02 किलोग्राम बीजों की आवश्यकता होगी।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

सीधे बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर उपरोक्त दर्शित उपचारण पश्चात् बुवाई करने पर सामान्य अंकुरण से अधिक अंकुरण प्राप्त होता है। रुट ट्रैनर मे पौध तैयारी के लिये उक्त उपचारण से सीधे बीज उपचारित कर बुवाई की जा सकती है।

रुट ट्रैनर में बीमारी एवं बचाव

प्रारंभ में पौधे अधिक कोमल होने के कारण उन्हें तेज घूप एवं गर्म हवा से बचाना आवश्यक होता है एवं किसी भी तरह की बीमारी दिखने पर फफूंदनाशक बैविस्टीन एवं कीटनाशक दवा एन्डोसल्फॉन का 0.1 प्रतिशत सांद्रता के घोल का समय समय पर किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

Scanned with OKEN Scanner